श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

दशमः स्कन्धः

त्रयस्त्रिंशः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—इत्थं भगवतो गोप्यः श्रुत्वा वाचः सुपेशलाः ।
जहुर्विरहजं तापं तदङ्गोपचिताशिषः ॥१॥

पदच्छेद— इत्थम् भगवतः गोप्यः श्रुत्वा वाचः सुपेशलाः ।
जहुः विरहजम् तापम् तत् अङ्ग उपचित आशिषः ॥

शब्दार्थ—

इत्थम्	२. इस प्रकार	जहुः	६. मुक्त हो गयीं (और)
भगवतः	३. भगवान् की	विरहजम्	७. विरह जन्य
गोप्यः	१. गोपियाँ	तापम्	८. ताप से भी
श्रुत्वा	६. सुनकर	तत् अङ्ग	१०. उनके अङ्ग सङ्ग से
वाचः	५. वाणी	उपचित	११. सफल
सुपेशलाः ।	४. प्रेम भरी सुमधुर	आशिषः ॥	१२. मनोरथ हो गयीं

श्लोकार्थ—गोपियाँ इस प्रकार भगवान् की प्रेम भरी सुमधुर वाणी सुनकर विरह जन्य ताप से मुक्त हो गयीं और उनके अङ्ग सङ्ग से सफल मनोरथ हो गयीं ॥

द्वितीयः श्लोकः

तत्रारभत गोविन्दो रासक्रीडामनुव्रतैः ।
स्त्रीरत्नैरन्वितः प्रीतैरन्योन्याबद्धबाहुभिः ॥२॥

पदच्छेद— तत्र आरभत गोविन्दः रासक्रीडाम् अनुव्रतैः ।
स्त्री रत्नैः अन्वितः प्रीतैः अन्योन्य बद्ध बाहुभिः ॥

शब्दार्थ—

तत्र	८. यमुना तट पर	स्त्रीरत्नैः	२. उन स्त्री रत्नों
आरभत	१२. प्रारम्भ की	अन्वितः	३. के साथ
गोविन्दः	१. भगवान् श्रीकृष्ण ने	प्रीतैः	६. प्रेम पूर्वक
रास	१०. रास	अन्योन्य	४. जो परस्पर
क्रीडाम्	११. क्रीडा	बद्ध	६. डाले खड़ी थीं तथा
अनुव्रतैः ।	७. उनका अनुसरण करने वाली थीं	बाहुभिः ॥	५. बाँह में बाँह

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण ने उन स्त्री रत्नों के साथ जो परस्पर बाँह में बाँह डाले खड़ी थीं तथा अनुसरण करने वाली थीं । यमुना तट पर प्रेम पूर्वक रास क्रीडा प्रारम्भ की ॥

तृतीयः श्लोकः

रासोत्सवः सम्प्रवृत्तो गोपीमण्डलमण्डितः ।
योगेश्वरेण कृष्णेन तासां मध्ये द्वयोर्द्वयोः ।
प्रविष्टेन गृहीतानां कण्ठे स्वनिकटं स्त्रियः ॥३॥

पदच्छेद— रास उत्सवः सम्प्रवृत्तः गोपी मण्डल मण्डितः ।
योगेश्वरेण कृष्णेन तासाम् मध्ये द्वयोः द्वयोः ।
प्रविष्टेन गृहीतानाम् कण्ठे स्वनिकटम् स्त्रियः ॥

शब्दार्थ—

रास	१४. रास	तासाम्	३. उन
उत्सवः	१५. लीला	मध्ये	५. मध्य में
सम्प्रवृत्तः	१६. प्रारम्भ की	द्वयोः द्वयोः ।	४. दो-दो गोपियों के
गोपी	११. इस प्रकार गोपियों के	प्रविष्टेन	६. प्रकट हो गये और
मण्डल	१२. समूह से	गृहीतानाम्	८. अपना हाथ डाल दिया तथा
मण्डितः ।	१३. सुशोभित होकर उन्होंने	कण्ठे	७. उनके गले में
योगेश्वरेण	१. सम्पूर्ण योगों के स्वामी	स्वनिकटम्	१०. अपने समीप ही समझा
कृष्णेन	२. श्रीकृष्ण	स्त्रियः ॥	६. गोपियों ने उन्हें

श्लोकार्थ—सम्पूर्ण योगों के स्वामी श्रीकृष्ण उन दो-दो गोपियों के मध्य में प्रकट हो गये और उनके गले में अपना हाथ डाल दिया तथा गोपियों ने उन्हें अपने समीप ही समझा । इस प्रकार गोपियों के समूह से सुशोभित होकर उन्होंने रासलीला प्रारम्भ की ॥

चतुर्थः श्लोकः

यं मन्येरन् नभस्तावद् विमानशतसङ्कुलम् ।
दिवौकसां सदाराणामौत्सुक्यापहृतात्मनाम् ॥४॥

पदच्छेद— यम् मन्येरन् नभः तावद् विमानशत सङ्कुलम् ।
दिवौकसाम् सदाराणाम् औत्सुक्य अपहृत आत्मनाम् ॥

शब्दार्थ—

यम्	१. गोपियों ने जब उन्हें	दिवौकसाम्	६. सभी देवता अपनी
मन्येरन्	२. अपने निकट समझा	सदाराणाम्	७. पत्नियों के साथ आ गये
नभः तावद्	३. तब तक आकाश में	औत्सुक्य	८. उत्सुकता के कारण
विमानशत	४. शत-शत विमानों की	अपहृत	१०. वश में नहीं था
सङ्कुलम् ।	५. भीड़ लग गयी	आत्मनाम् ॥	९. उनका मन

श्लोकार्थ—गोपियों ने जब उन्हें अपने निकट समझा तब-तक आकाश में शत-शत विमानों की भीड़ लग गयी । सभी देवता अपनी पत्नियों के साथ आ गये । उत्सुकता के कारण उनका मन वश में नहीं था ॥

पञ्चमः श्लोकः

ततो दुन्दुभयो नेदुर्निपेतुः पुष्पवृष्टयः ।
जगुर्गन्धर्वपतयः सस्त्रीकास्तद्यशोऽमलम् ॥५॥

पदच्छेद— ततः दुन्दुभयः नेदुः निपेतुः पुष्प वृष्टयः ।
जगुः गन्धर्व पतयः सस्त्रीकाः तत् यशः अमलम् ॥

शब्दार्थ—

ततः	१. तब	जगुः	१२. गान करने लगे
दुन्दुभयः	२. दिव्य दुन्दुभियाँ	गन्धर्व पतयः	७. गन्धर्व पति
नेदुः	३. बज उठीं	सस्त्रीकाः	८. अपनी-अपनी पत्नियों के साथ
निपेतुः	६. होने लगी	तत्	९. भगवान् के
पुष्प	४. दिव्य पुष्पों की	यशः	११. यश का
वृष्टयः ।	५. वर्षा	अमलम् ॥	१०. निर्मल

श्लोकार्थ—तब दिव्य दुन्दुभियाँ बज उठीं । दिव्य पुष्पों की वर्षा होने लगी । गन्धर्व पति अपनी-अपनी पत्नियों के साथ भगवान् के निर्मल यश का गान करने लगे ॥

षष्ठः श्लोकः

वलयानां नूपुराणां किङ्किणीनां च योषिताम् ।
सप्रियाणामभूच्छब्दस्तुमुलो रासमण्डले ॥६॥

पदच्छेद— वलयानाम् नूपुराणाम् किङ्किणीनाम् च योषिताम् ।
सप्रियाणाम् अभूत् शब्दः तुमुलः रासमण्डले ॥

शब्दार्थ—

वलयानाम्	४. कलाइयों के कङ्गन	सप्रियाणाम्	२. श्रीकृष्ण के साथ
नूपुराणाम्	५. पैरों के पायजेब	अभूत्	१०. हो रही थी
किङ्किणीनाम्	७. करधनी के घुंघरुओं की	शब्दः	८. मधुर ध्वनि भी
च	६. और	तुमुलः	९. बड़े ही जोर से
योषिताम् ।	३. गोपियों की	रासमण्डले ॥	१. रासमण्डल में

श्लोकार्थ—उस समय रासमण्डल में गोपियों की कलाइयों के कङ्गन पैरों के पायजेब और करधनी के घुंघरुओं की मधुर ध्वनि भी बड़े ही जोर से हो रही थी ॥

सप्तमः श्लोकः

तत्रातिशुशुभे ताभिर्भगवान् देवकीसुतः ।
मध्ये मणीनां हैमानां महामरकतो यथा ॥७॥

पदच्छेद— तत्र अति शुशुभे ताभिः भगवान् देवकी सुतः ।
मध्ये मणीनाम् हैमानाम् महा मरकतो यथा ॥

शब्दार्थ			
तत्र	१. यमुना की रेती पर	मध्ये	१०. मध्य में
अति	५. उसी प्रकार बड़ी	मणीनाम्	९. मणियों के
शुशुभे	६. शोभा हुई	हैमानाम्	८. सुवर्ण
ताभिः	२. गोपियों के बीच में	महा	११. ज्योतिर्मयी
भगवान्	४. भगवान् श्रीकृष्ण की	मरकतो	१२. नीलमणि चमक रही हो
देवकी सुतः ।	३. देवकी नन्दन	यथा ॥	७. जैसे

श्लोकार्थ—यमुना की रेती पर गोपियों के बीच में देवकी नन्दन श्रीकृष्ण की उसी प्रकार बड़ी शोभा हुई जैसे सुवर्ण मणियों के मध्य में ज्यातिर्मयी नीलमणि चमक रही हो ॥

अष्टमः श्लोकः

पादन्यासैर्भुजविधुतिभिः सस्मितैर्भ्रूविलासै-
र्भज्यन्मध्यैश्चलकुचपटैः कुण्डलैर्गण्डलोलैः ।
स्विद्यन्मुख्यः कबररशनाग्रन्थयः कृष्णवध्वो
गायन्त्यस्तं तडित इव ता मेघचक्रे विरेजुः ॥८॥

पदच्छेद—
पादन्यासैः भुजविधुतिभिः सस्मितैः भ्रूविलासैः भज्यत् मध्यैः चलत् कुचपटैः कुण्डलैः गण्ड लोलैः ।
स्विद्यत् मुख्यः कबररशना ग्रन्थयः कृष्णवध्वः गायन्त्यः तम् तडित इव ताः मेघचक्रे विरेजुः ॥

शब्दार्थ			
पादन्यासैः	१. गोपियाँ पैर नचातीं	स्विद्यत् मुख्यः	११. मुख पर पसीना आ गया था
भुजविधुतिभिः	२. हाथ घुमातीं	कबररशना	१२. केशों की चोटियाँ
सस्मितैः	३. मुसकान सहित	ग्रन्थयः	१३. ढीली पड़ गईं थीं
भ्रू विलासैः	४. भौंहें मटकातीं तो वे	कृष्णवध्वः	१४. श्रीकृष्ण की परम प्रेयसी
भज्यत्मध्यैः	५. मानों कमर से टूट-टूट जाती	गायन्त्यतम्	१६. गाती हुई उन श्रीकृष्ण रूपी
चलत्	६. चलने की फुर्ती से उनके	तडितः	१९. चमकती बिजली की भाँति
कुचपटैः	७. स्तन हिलते और वस्त्र उड़जातेइव		१८. मानों
कुण्डलैः	९. कुण्डल उनके	ताः	१५. वे गोपियाँ
गण्ड	१०. गण्ड स्थल पर चमक रहे थे	मेघचक्रे	१७. मेघ मण्डल के बीच
लोलैः ।	८. चञ्चल	विरेजुः ॥	२०. सुशोभित हो रही थीं ।

श्लोकार्थ—गोपियाँ पैर नचातीं, हाथ घुमातीं, मुसकान सहित भौहें मटकातीं तो वे मानों कमर से टूट-टूट जातीं । चलने की फुर्ती से उनके स्तन हिलते और वस्त्र उड़ जाते । चञ्चल कुण्डल उनके गण्ड स्थल पर चमक रहे थे । मुख पर पसीना आ गया था । केशों की चोटियाँ ढीली पड़ गईं थीं । श्रीकृष्ण की परम प्रेयसी वे गोपियाँ गाती हुई श्रीकृष्णरूपी मेघ मण्डल के बीच मानों चमकती बिजली की भाँति सुशोभित हो रहीं थीं ॥

नवमः श्लोकः

उच्चैर्जगुर्नृत्यमाना रक्तकण्ठ्यो रतिप्रियाः ।
कृष्णाभिमर्शमुदिता यद्गीतेनेदमावृतम् ॥९॥

पदच्छेद— उच्चैः जगुः नृत्यमानाः रक्त कण्ठ्यः रति प्रियाः ।
कृष्ण अभिमर्श मुदिताः यत् गीतेन इदम् आवृतम् ॥

शब्दार्थ—उच्चैः	४. उच्च	कृष्ण	७. उन्हीं श्रीकृष्ण का
जगुः	६. कर रही थीं । तथा	अभिमर्श	८. संस्पर्श पाकर
नृत्यमानाः	२. नाचतीं और	मुदिताः	९. आनन्द मग्न हो रही थीं
रक्त	३. प्रेम पूर्ण	यत् गीतेन	१०. जिनके गान से
कण्ठ्यः	५. स्वर से गान	इदम्	११. यह सारा जगत्
रति प्रियाः ।	१. वे कृष्ण को प्यारी गोपियां	आवृतम् ॥	१२. आज भी गूंज रहा है

श्लोकार्थ—वे कृष्ण की प्यारी गोपियाँ नाचतीं और प्रेम पूर्ण उच्च स्वर से गान कर रही थीं । तथा उन्हीं श्रीकृष्ण का संस्पर्श पाकर आनन्द मग्न हो रही थीं । जिनके गान से यह सारा जगत् आज भी गूंज रहा है ।

दशमः श्लोकः

काचित् समं मुकुन्देन स्वरजातीरमिश्रिताः ।
उन्निन्ये पूजिता तेन प्रीयता साधु साध्विति
तदेव ध्रुवमुन्निन्ये तस्यै मानं च बह्वदात् ॥१०॥

पदच्छेद— काचित् समम् मुकुन्देन स्वर जातीः अमिश्रिताः ।
उन्निन्ये पूजिता तेन प्रीयता साधु साधुइति ।
तत् एव ध्रुवम् उन्निन्ये तस्यै मानम् च बहु अदात् ॥

शब्दार्थ—काचित्	१. कोई गोपी	साधु साधुइति	८. वाह-वाह कह कर उसकी
समम् मुकुन्देन	२. भगवान् के साथ	तत् एव	१०. उसी राग को अन्य गोपी ने
स्वर	३. उनके स्वर में	ध्रुवम् उन्निन्ये	११. ध्रुव पद में गाया
जातीः	४. स्वर मिलाकर	तस्यै	१३. उस गोपी को भी
अमिश्रिताः	५. कुछ ऊँचे स्वर से	मानम्	१५. सम्मान
उन्निन्ये	६. राग अलापने लगी	च	१२. और तब
पूजिता	९. प्रशंसा करने लगे	बहु	१४. भगवान् ने
तेन प्रीयता	७. उससे प्रसन्न होकर श्रीकृष्ण	अदात् ॥	१६. दिया

श्लोकार्थ—कोई गोपी भगवान् के साथ उनके स्वर में स्वर मिला कर कुछ ऊँचे स्वर से राग अलापने लगी । उससे प्रसन्न होकर श्रीकृष्ण वाह-वाह कह कर उसकी प्रशंसा करने लगे । उसी राग को दूसरी गोपी ने ध्रुव पद में गाया । और तब उस गोपी को भी भगवान् ने सम्मान दिया ।।

एकादशः श्लोकः

काचिद् रासपरिश्रान्ता पार्श्वस्थस्य गदाभृतः ।
जग्राह बाहुना स्कन्धं श्लथद्वलयमल्लिका ॥११॥

पदच्छेद— काचित् रास परिश्रान्ता पार्श्वस्थस्य गदाभृतः ।
जग्राह बाहुना स्कन्धम् श्लथत् वलय मल्लिका ॥

शब्दार्थ—

काचित्	१. एक गोपी	जग्राह	१२. कस कर पकड़ लिया
रास	२. नृत्य करते-करते	बाहुना	११. अपनी बाँह से
परिश्रान्ता	३. थक गई	स्कन्धम्	१०. कन्धे को
पार्श्वं	७. अपने बगल में	श्लथत्	६. खिसकने लगे उसने
स्थस्य	८. खड़े	वलय	४. उसकी कलाइयों से कंगन और
गदाभृतः ।	९. श्याम सुन्दर के	मल्लिका ॥	५. बेला के फूल

श्लोकार्थ—एक गोपी नृत्य करते-करते थक गई। उसकी कलाइयों से कंगन और बेला के फूल खिसकने लगे। उसने अपने बगल में खड़े श्याम सुन्दर के कन्धे को कस कर पकड़ लिया ॥

द्वादशः श्लोकः

तत्रैकांसगतं बाहुं कृष्णस्योत्पलसौरभम् ।
चन्दनालिप्तमाघ्राय हृष्टरोमा चुचुम्ब ह ॥१२॥

पदच्छेद— तत्र एका अंसगतम् बाहुम् कृष्णस्य उत्पल सौरभम् ।
चन्दन आलिप्तम् आघ्राय हृष्ट रोमा चुचुम्बह ॥

शब्दार्थ—

तत्र एका	२. वहाँ एक गोपी के	चन्दन	७. उसमें चन्दन का
अंसगतम्	४. कंधे पर रखा	आलिप्तम्	८. लेप भी था, उसे
बाहुम्	३. हाथ	आघ्राय	९. सूँघ कर गोपी का
कृष्णस्य	१. श्रीकृष्ण ने अपना	हृष्ट	११. खिल उठा तब उसने वह
उत्पल	५. वह कमल के समान	रोमा	१०. रोम-रोम
सौरभम् ।	६. सुगन्धित था और	चुचुम्बह ॥	१२. चूम लिया

श्लोकार्थ—वहाँ श्रीकृष्ण ने अपना हाथ एक गोपी के कंधे पर रखा। वह कमल के समान सुगन्धित था। और उसमें चन्दन का लेप भी था। उसे सूँघ कर गोपी का रोम-रोम खिल उठा। तब उसने वह हाथ चूम लिया ॥

त्रयोदशः श्लोकः

कस्याश्चिन्नाट्यविक्षिप्तकुण्डलत्विषमण्डितम् ।
गण्डं गण्डे सन्दधत्या अदात्ताम्बूलचर्वितम् ॥१३॥

पदच्छेद— कस्याश्चित् नाट्य विक्षिप्त कुण्डल त्विष मण्डितम् ।
गण्डम् गण्डे सन्दधत्या अदात् ताम्बूल चर्वितम् ॥

शब्दार्थ –

कस्याश्चित्	१.	एक गोपी के	गण्डम्	७.	उसने अपने कपोलों को
नाट्य	२.	नाचने के कारण	गण्डे	८.	श्रीकृष्ण के कपोल से
विक्षिप्त	४.	हिल रहे थे, उसकी	सन्दधत्या	९.	सटा दिया और
कुण्डल	३.	कुण्डल	अदात्	१२.	मुँह में दे दिया
त्विष	५.	छटा से उसके	ताम्बूल	११.	पान उसके
मण्डितम् ।	६.	कपोल और भी चमक रहे थे	चर्वितम् ॥	१०.	भगवान् ने अपना चबाया हुआ

श्लोकार्थ—एक गोपी के नाचने के कारण कुण्डल हिल रहे थे। उसकी छटा से उसके कपोल और भी चमक रहे थे। उसने अपने कपोलों को श्रीकृष्ण के कपोल से सटा दिया। और भगवान् ने अपना चबाया हुआ पान उसके मुँह में दे दिया ॥

चतुर्दशः श्लोकः

नृत्यन्ती गायती काचित् कूजन्नूपुरमेखला ।
पार्श्वस्थाच्युतहस्ताब्जं श्रान्ताधात् स्तनयोः शिवम् ॥१४॥

पदच्छेद— नृत्यन्ती गायती काचित् कूजत् नू पुर मेखला ।
पार्श्वस्थ अच्युत हस्ताब्जम् श्रान्ता अधात् स्तनयोः शिवम् ॥

शब्दार्थ—

नृत्यन्ती	५.	नाच और	पार्श्वस्थ	८.	अपने पास में ही खड़े
गायती	६.	गा रही थी	अच्युत	९.	श्याम सुन्दर के
काचित्	१.	कोई गोपी	हस्ताब्जम्	११.	कर कमल को
कूजत्	४.	झनकारती हुई	श्रान्ता	७.	जब वह थक गई तो उसने
नू पुर	२.	नूपुर और	अधात्	१३.	रख लिया
मेखला ।	३.	करधनी के घुंघरुओं को	स्तनयोः	१२.	अपने दोनों स्तनों पर
			शिवम् ॥	१०.	शीतल

श्लोकार्थ—कोई गोपी नूपुर और करधनी के घुंघरुओं को झनकारती हुई नाच और गा रही थी। जब वह थक गई तो उसने अपने पास में खड़े श्याम सुन्दर के शीतल कर कमल को अपने दोनों स्तनों पर रख लिया ॥

पञ्चदशः श्लोकः

गोप्यो लब्ध्वाच्युतं कान्तं श्रिय एकान्तवल्लभम् ।
गृहीतकण्ठ्यस्तद्दोर्भ्यां गायन्त्यस्तं विजह्रिरे ॥१५॥

पदच्छेद— गोप्यः लब्ध्वा अच्युतम् कान्तम् श्रियः एकान्त वल्लभम् ।
गृहीत कण्ठ्यः तत् दोर्भ्याम् गायन्त्यः तम् विजह्रिरे ॥

शब्दार्थ—			
गोप्यः	१. गोपियाँ	गृहीत	१४. बाँध रखा था
लब्ध्वा	७. पाकर	कण्ठ्यः	१२. गलों को
अच्युतम्	६. श्रीकृष्ण को	तत्	११. श्रीकृष्ण ने उनके
कान्तम्	३. परम प्रियतम	दोर्भ्याम्	१३. अपने भुज पाश में
श्रियः	२. लक्ष्मी जी के	गायन्त्यः	८. गान करती हुई
एकान्त	४. एकान्त	तम्	९. उनके साथ
वल्लभम् ।	५. वल्लभ	विजह्रिरे ॥	१०. विहार करने लगीं

श्लोकार्थ—गोपियाँ लक्ष्मी जी के परम प्रियतम एकान्त वल्लभ श्रीकृष्ण को पाकर गान करती हुईं उनके साथ बिहार करने लगीं । श्रीकृष्ण ने उनके गलों को अपने भुजपाश में बाँध रखा था ॥

षोडशः श्लोकः

कर्णोत्पलालकविटङ्ककपोलघर्मवक्त्रश्रियो वलयनूपुरघोषवाद्यैः ।
गोप्यः समं भगवता ननृतुः स्वकेशस्रस्तस्रजो भ्रमरगायकरासगोष्ठ्याम् ॥१६॥

पदच्छेद— कर्णउत्पल अलकविटङ्क कपोल घर्मवक्त्र श्रियः वलय नूपुर घोष वाद्यैः ।
गोप्यः समम् भगवता ननृतुः स्वकेश स्रस्तस्रजः भ्रमर गायक रास गोष्ठ्याम् ॥

शब्दार्थ—			
कर्णउत्पल	१. कानों में कमल के कुण्डल और	**गोप्यः**	६. गोपियाँ
अलकविटङ्क	३. अलकों की शोभा थी	**समम् भगवता**	८. भगवान् के साथ
कपोल	२. कपोलों पर	**ननृतुः**	९. नृत्य कर रही थीं
घर्मवक्त्र	४. पसीने से मुख की	**स्वकेश**	१३. उनके केशों में गुंथी
श्रियः	५. शोभा निराली थी	**स्रस्तस्रजः**	१४. मालायें टूट कर गिर रही थीं
वलय	१०. उनके कंगन और	**भ्रमर**	१५. भौंरे उनके सुर में
नूपुर	११. पायजेबों के	**गायक**	१६. सुर मिला रहे थे
घोषवाद्यैः ।	१२. बाजे बाज रहे थे	**रास गोष्ठ्याम् ॥**	७. रास मण्डल में

श्लोकार्थ—उनके कानों में कमल के कुण्डल और कपोलों पर अलकों की शोभा थी । पसीने से मुख की शोभा निराली थी । गोपियाँ रास मण्डल में भगवान् के साथ नृत्य कर रही थीं । उनके कंगन और पायजेबों के बाजे बज रहे थे । उनके केशों में गुंथी मालायें टूट कर गिर रही थीं । भौंरें उनके सुर में सुर मिला रहे थे ॥

सप्तदशः श्लोकः

एवं परिष्वङ्गकराभिमर्शस्निग्धेक्षणोद्दामविलासहासैः ।
रेमे रमेशो व्रजसुन्दरीभिर्यथार्भकः स्वप्रतिबिम्बविभ्रमः ॥१७॥

पदच्छेद— एवम् परिष्वङ्ग कर अभिमर्श स्निग्ध ईक्षण उद्दाम विलास हासैः ।
रेमे रमेशः व्रजसुन्दरीभिः यथा अर्भकः स्वप्रतिबिम्ब विभ्रमः ॥

शब्दार्थ—

एवम्	५. वैसे ही	रेमे	१४. उन्होंने विहार किया
परिष्वङ्ग	७. हृदय से लगाते थे	रमेशः	६. भगवान् श्रीकृष्ण
कर	८. कभी हाथ से उनका	व्रजसुन्दरीभिः	१३. व्रज गोपियों के साथ
अभिमर्श	९. अङ्ग स्पर्श करते कभी	यथा	१. जैसे
स्निग्ध ईक्षण	१०. प्रेम भरी चितवन से देखते	अर्भकः	२. नन्हा शिशु
उद्दाम विलास	११. कभी लीला से	स्वप्रतिबिम्ब	३. अपनी परछाँई के
हासैः ।	१२. हंसी हंसते हुये	विभ्रमः ॥	४. साथ खेलता है

श्लोकार्थ—जैसे नन्हा शिशु अपनी परछाइँ से खेलता है। वैसे ही भगवान् श्रीकृष्ण कभी उन्हें हृदय से लगाते थे। कभी हाथ से उनका अङ्ग स्पर्श करते और कभी प्रेम भरी चितवन से देखते कभी लीला से हंसी हंसते हुये व्रज गोपियों के साथ उन्होंने विहार किया ॥

अष्टादशः श्लोकः

तदङ्गसङ्गप्रमुदाकुलेन्द्रियाः केशान् दुकूलं कुचपट्टिकां वा ।
नाञ्जः प्रतिव्योढुमलं व्रजस्त्रियो विस्रस्तमालाभरणाः कुरूद्वह ॥१८॥

पदच्छेद — तत् अङ्ग सङ्ग प्रमुदा आकुलेन्द्रियाः केशान् दुकूलम् कुचपट्टिकाम् वा ।
न अञ्जः प्रतिव्योढुम् अलम् व्रजस्त्रियः विस्रस्त मालाआभरणा कुरूद्वह ॥

शब्दार्थ—

तत् अङ्ग	२. भगवान् के अङ्गों का	न	११. न हो सकीं
सङ्ग	३. स्पर्श प्राप्त करके	अञ्जः प्रतिव्योढुम्	९. थोड़ा सा भी संभालने में
प्रमुदा	४ अत्यन्त आनन्द से	अलम्	१०. समर्थ
आकुलेन्द्रियाः	५ गोपियों की इन्द्रियाँ	व्रजस्त्रियः	१२. व्रजवासिनी स्त्रियों के
केशान्	६. वे अपने केश	विस्रस्त	१४. अस्त-व्यस्त हो गये
दुकूलम्	७ वस्त्र	मालाआभरणाः	१३. हार और गहने भी
कुचपट्टिकाम् ।	८. अथवा कञ्चुकी को	कुरूद्वह ॥	१. हे परीक्षित् !

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! भगवान् के अङ्गों का स्पर्श प्राप्त करके अत्यन्त आनन्द से गोपियों को इन्द्रियाँ विह्वल हो गयीं। वे अपने केश, वस्त्र अथवा कञ्चुकी को थोड़ा भी संभालने में समर्थ न हो सकीं व्रजवासिनी स्त्रियों के हार और गहने भी अस्त-व्यस्त हो गये ॥

एकोनविंशः श्लोकः

कृष्णविक्रीडितं वीक्ष्य मुमुहुः खेचरस्त्रियः ।
कामार्दिताः शशाङ्कश्च सगणो विस्मितोऽभवत् ॥१९॥

पदच्छेद— कृष्ण विक्रीडितम् वीक्ष्य मुमुहुः खेचर स्त्रियः ।
काम अर्दिताः शशाङ्कः च सगणः विस्मितः अभवत् ॥

शब्दार्थ—

कृष्ण	१.	भगवान् श्री कृष्ण की	काम	६.	मिलन की
विक्रीडितम्	२.	रासलीला	अर्दिताः	७.	कामना से
वीक्ष्य	३.	देखकर	शशाङ्कः च	९.	और चन्द्रमा
मुमुहुः	८.	मोहित हो गयीं ,	सगणः	१०.	तारों तथा ग्रहों के साथ.
खेचर	४.	देवताओं की	विस्मितः	११.	चकित और विस्मित
स्त्रियः ।	५.	स्त्रियाँ भी	अभवत् ॥	१२.	हो गये

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण की रासलीला देखकर देवताओं की स्त्रियाँ भी मिलन की कामना से मोहित हो गयीं । और चन्द्रमा तारों तथा ग्रहों के साथ चकित और विस्मित हो गये ॥

विंशः श्लोकः

कृत्वा तावन्तमात्मानं यावतीर्गोपयोषितः ।
रेमे स भगवांस्ताभिरात्मारामोऽपि लीलया ॥२०॥

पदच्छेद— कृत्वा तावन्तम् आत्मानम् यावतीः गोपयोषितः ।
रेमे स भगवान् ताभिः आत्मारामः अपि लीलया ॥

शब्दार्थ—

कृत्वा	१०.	बताये और	रेमे	१२.	विहार किया
तावन्तम्	९.	उनने ही रूप	सः भगवान्	१.	वे भगवान् तो
आत्मानम्	८.	अपने	ताभिः	११.	उन गोपियों के साथ
यावतीः	५.	जितनी	आत्मारामः	२.	आत्माराम हैं
गोप	६.	गोप	अपि	३.	फिर भी
योषितः ।	७.	स्त्रियां थीं	लीलया ॥	४.	लीलापूर्वक उन्होंने

श्लोकार्थ—वे भगवान् तो आत्माराम हैं। फिर भी लीलापूर्वक उन्होंने जितनी गोप स्त्रियां थीं अपने उतने ही रूप बनाये और उन गोपियों के साथ विहार किया ॥

एकविंशः श्लोकः

तासामतिविहारेण श्रान्तानां वदनानि सः ।
प्रामृजत् करुणः प्रेम्णा शन्तमेनाङ्गपाणिना ॥२१॥

पदच्छेद— तासाम् अति विहारेण श्रान्तानाम् वदनानि सः ।
प्रामृजत् करुणः प्रेम्णा शन्तमेन अङ्ग पाणिना ॥

शब्दार्थ—

तासाम्	४. गोपियाँ	प्रामृजत्	१२. पोंछे
अति	२. बहुत देर तक	करुणः	६. करुणामय
विहारेण	३. विहार करने के कारण	प्रेम्णा	८. बड़े प्रेम से
श्रान्तानाम्	५. थक गयीं	शन्तमेन	९. अपने सुखद
वदनानि	११. उनके मुँह	अङ्ग	१. परीक्षित्
सः ।	७. उन भगवान् श्रीकृष्ण	पाणिना ॥	१०. हाथ से

श्लोकार्थ—परीक्षित् ! बहुत देर तक विहार करने के कारण गोपियाँ थक गयीं । करुणामय भगवान् श्रीकृष्ण ने बड़े प्रेम से अपने सुखद हाथ से उनके मुँह पोंछे ।।

द्वाविंशः श्लोकः

गोप्यः स्फुरत्पुरटकुण्डलकुन्तलत्विड्गण्डश्रिया सुधितहासनिरीक्षणेन ।
मानं दधत्य ऋषभस्य जगुः कृतानि पुण्यानि तत्कररुहस्पर्शप्रमोदाः ॥२२॥

पदच्छेद— गोप्यः स्फुरत् पुरट कुण्डल कुन्तलत्विड् गण्ड श्रिया सुधित हास निरीक्षणेन ।
मानम् दधत्यः ऋषभस्य जगुः कृतानि पुण्यानि तत् कर रुह स्पर्श प्रमोदाः ॥

शब्दार्थ—

गोप्यः	३. गोपियों को बड़ा ही	मानम्दधत्यः	१२. सम्मान किया और उनकी
स्फुरत्	५. झिलमिलाते हुये	ऋषभस्य	११. भगवान् श्रीकृष्ण का
पुरट कुण्डल	६. सोने के कुण्डलों और	जगुः	१४ गान करने लगीं
कुन्तलत्विड्	७. घुंघराली अलकों की कान्ति से	कृतानिपुण्यानि	१३ परम पवित्र लीलाओं का
गण्डश्रिया	८. सुशोभित कपोलों तथा	तत् कर	१. भगवान् के कर कमल और
सुधितहास	९. अमृतमयी मुसकान और	रुहस्पर्श	२. नख-स्पर्श से
निरीक्षणेन ।	१०. प्रेम भरी चितवन से	प्रमोदाः ॥	४. आनन्द प्राप्त हुआ । उन्होंनें

श्लोकार्थ—भगवान् के कर कमल और नख-स्पर्श से गोपियों को बड़ा ही आनन्द प्राप्त हुआ । उन्होंने झिलमिलाते सोने के कुण्डलों और घुंघराली अलकों की कान्ति से सुशोभित कपोलों तथा अमृतमयी मुसकान और प्रेमभरी चितवन से भगवान् श्रीकृष्ण का सम्मान किया और उनकी परम पवित्र लीलाओं का गान करने लगीं ।।

त्रयोविंशः श्लोकः

ताभिर्युतः श्रममपोहितुमङ्गसङ्गघृष्टस्रजः स कुचकुङ्कुमरञ्जितायाः ।
गन्धर्वपालिभिरनुद्रुत आविशद् वाः श्रान्तो गजीभिरिभराडिव भिन्नसेतुः ॥२३॥

पदच्छेद— ताभिः युतः श्रमम् अपोहितुम् अङ्ग-सङ्ग घृष्टः स्रजः सः कुचकुङ्कुम रञ्जितायाः ।
गन्धर्व पालिभिः अनुद्रुतः आविशत् वाः श्रान्तः गजीभिः इभराडिव भिन्नसेतुः ॥

शब्दार्थ—

ताभिः युतः	८. गोपियों के साथ	गन्धर्व पालिभिः	१६. गन्धर्व राज की भाँति लग रहे थे
श्रमम्	६. अपनी थकान	अनुद्रुतः	१५. अनुगत भौंरे
अपोहितुम्	७. दूर करने के लिये	आविशत्	१०. प्रवेश किया । उस समय
अङ्ग-सङ्ग घृष्टः	१२. गोपियों के अङ्ग-सङ्ग की रगड़ से और	वाः	९. यमुना के जल में
स्रजः	११. भगवान् की वनमाला	श्रान्तः	२. थका हुआ
सः	५. भगवान् श्रीकृष्ण ने	गजीभिः	४. हथिनियों के साथ क्रीड़ा करते हैं
कुचकुङ्कुम	१३. वक्षः स्थल की केसर से	इभराडिव	३. गजराज जैसे
रञ्जितायाः ।	१४. रङ्ग सी गई थी उनके	भिन्नसेतुः ॥	१. मर्यादाओं का अतिक्रमण करने वाला

श्लोकार्थ— मर्यादाओं का अतिक्रमण करने वाला थका हुआ गजराज जैसे हथनियों के साथ क्रीड़ा करते हैं, वैसे ही भगवान् श्रीकृष्ण ने अपनी थकान दूर करने के लिये गोपियों के साथ यमुना के जल में प्रवेश किया । उस समय भगवान् की वनमाला गोपियों के अङ्ग-सङ्ग की रगड़ से और वक्षः स्थल की केसर से रंग सी गई थी । उनके अनुगत भौंरे गन्धर्व राज की भाँति लग रहे थे ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

सोऽम्भस्यलं युवतिभिः परिषिच्यमानः प्रेम्णेक्षितः प्रहसतीभिरितस्ततोऽङ्ग ।
वैमानिकैः कुसुमवर्षिभिरीड्यमानो रेमे स्वयं स्वरतिरत्र गजेन्द्रलीलः ॥२४॥

पदच्छेद—सः अम्भसि अलम् युवतिभिः परिषिच्यमानः प्रेम्णा ईक्षितः प्रहसतीभिः इतः ततः अङ्गः ।
वैमानिकैः कुसुम वर्षिभिः ईड्यमानः रेमे स्वयम् स्वरतिः अत्र गजेन्द्रलीलः ॥

शब्दार्थ—

सः अम्भसि	५. उन भगवान् पर यमुना जल से	वैमानिकैः	८. विमानों पर चढ़े देवता
अलम् युवतिभिः	६ गोपियों ने खूब	कुसुम वर्षिभिः	९. पुष्पों की वर्षा कर के उनकी
परिषिच्यमानः	७. जल की बौछारें डाली	ईड्यमानः	१०. स्तुति करने लगे
प्रेम्णाईक्षितः	२. प्रेमभरी चितवन से	रेमे	१४. की
प्रहसतीभिः	३ हंस-हंस कर	स्वयम् स्वरतिः	११. स्वयम् भगवान् श्रीकृष्ण ने
इतः ततः	४. इधर-उधर से	अत्र	१२. इस प्रकार यमुना जल में
अङ्ग ।	१. हे परीक्षित् !	गजेन्द्रलीलः ॥	१३. गजराज के समान क्रीड़ा

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! प्रेमभरी चितवन से हंस-हंस कर इधर-उधर से उन भगवान् पर गोपियों ने खूब जल की बोछारें डाली । विमानों पर चढ़े देवता पुष्पों की वर्षा करके उनकी स्तुति करने लगे । स्वयम् भगवान् श्रीकृष्ण ने इस प्रकार यमुना जल में गजराज के समान क्रीड़ा की ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

ततश्च कृष्णोपवने जलस्थलप्रसूनगन्धानिलजुष्टदिक्तटे ।
चचार भृङ्गप्रमदागणावृतो यथा मदच्युद् द्विरदः करेणुभिः ॥२५॥

पदच्छेद— ततः च कृष्ण उपवने जल स्थल प्रसून गन्ध अनिल जुष्ट दिक्तटे ।
चचार भृङ्ग प्रमदागण आवृतः यथा मदच्युत् द्विरदः करेणुभिः ॥

शब्दार्थ—

ततः	१. इसके बाद	चचार	१२.	वे विचरण करने लगे
च	४. और	भृङ्ग	३.	भौंरों
कृष्ण	२. भगवान् श्रीकृष्ण	प्रमदागण	५.	युवतियों के समूह से
उपवने जल	८. उपवन में गये वहाँ जल	आवृतः	६.	घिरे हुये
स्थल	९. और स्थल में सुन्दर	यथा	१३.	उसी प्रकार
प्रसून गन्ध	१०. सुगन्ध वाले पुष्प खिले थे	मदच्युत्	१४.	जैसे मतवाला गजराज
अनिल जुष्टः	११. सुगन्धित वायुयुक्तस्थल में	द्विरदः	१५.	हथिनियों के साथ
दिक्तटे ।	७. यमुना तट के	करेणुभिः ॥	१६.	घूम रहा हो

श्लोकार्थ—इसके बाद भगवान् श्रीकृष्ण भौंरों और युवतियों के समूह से घिरे हुये यमुना तट के उपवन में गये, वहाँ जल और स्थल में सुन्दर सुगन्ध वाले पुष्प खिले थे। सुगन्धित वायु युक्त स्थल में वे विचरण करने लगे , उसी प्रकार जैसे मतवाला गजराज हथनियों के साथ घूम रहा हो ॥

षड्विंशः श्लोकः

एवं शशाङ्कांशुविराजिता निशाः स सत्यकामोऽनुरताबलागणः ।
सिषेव आत्मन्यवरुद्धसौरतः सर्वाः शरत्काव्यकथारसाश्रयाः ॥२६॥

पदच्छेद— एवम् सिषेव शशाङ्क अंशु विराजिताः निशाः सः सत्यकामः अनुरत अबला गणः ।
सिषेव आत्मनि अवरुद्ध सौरतः सर्वाः शरत् काव्य कथा रस आश्रयाः ॥

शब्दार्थ —

एवम्	१. इस प्रकार	सिषेव	१४.	विहार किया
शशाङ्क अंशु	२. चन्द्रमा की किरणों	आत्मनि	१२.	अपने
विराजिता	३. सुशोभित	अवरुद्ध	१३.	अधीन करके
निशाः	४. शरद् की रात्रि में	सौरतः	११.	काम भाव को
सः सत्यकामः	८. सत्य सङ्कल्प श्रीकृष्ण ने	सर्वाः शरत्	६.	समस्त शरद् ऋतु
अनुरत	१०. साथ	काव्य कथा	५.	काव्यों में वर्णित सामग्रियों से
अबला गणः ।	९. स्त्री समूह के	रस आश्रयाः ॥	७.	रस से युक्त रात्रियों में

श्लोकार्थ—इस प्रकार चन्द्रमा की किरणों से सुशोभित शरद् की रात्रि में काव्यों में वर्णित सामग्रियों से समस्त, शरद् ऋतु की रस से युक्त रात्रियों में सत्य सङ्कल्प श्रीकृष्ण ने स्त्री समूह के साथ काम भाव को अपने अधीन करके विहार किया ॥

सप्तविंशः श्लोकः

राजोवाच— संस्थापनाय धर्मस्य प्रशमायेतरस्य च।
अवतीर्णो हि भगवानंशेन जगदीश्वरः ॥२७॥

पदच्छेद— संस्थापनाय धर्मस्य प्रशमाय इतरस्य च।
अवतीर्णः हि भगवान् अंशेन जगत् ईश्वरः ॥

शब्दार्थ—

संस्थापनाय	६. स्थापना	अवतीर्णः	१०. अवतीर्ण हुये हैं
धर्मस्य	५. धर्म की	हि भगवान्	३. भगवान् श्रीकृष्ण अपने
प्रशमाय	९. विनाश के लिये	अंशेन	४. अंश बलराम जी सहित
इतरस्य	८. अधर्म के	जगत्	१. सारे जगत् के
च।	७. और	ईश्वरः ॥	२. ईश्वर

श्लोकार्थ—सारे जगत् के ईश्वर भगवान् श्रीकृष्ण अपने अंश बलराम जी के सहित धर्म की स्थापना और अधर्म के विनाश के लिये अवतीर्ण हुये हैं ॥

अष्टाविंशः श्लोकः

स कथं धर्मसेतूनां वक्ता कर्ताभिरक्षिता।
प्रतीपमाचरद् ब्रह्मन् परदाराभिमर्शनम् ॥२८॥

पदच्छेद— सः कथम् धर्मसेतूनां वक्ता कर्ता अभिरक्षिता।
प्रतीपम् आचरत् ब्रह्मन् पर दारा अभिमर्शनम् ॥

शब्दार्थ—

सः	२. वे	प्रतीपम्	७. उन्होंने धर्म के विपरीत
कथम्	११. कैसे	आचरत्	१२. किया
धर्मसेतूनां	३. धर्म मर्यादा	ब्रह्मन्	१. हे ब्रह्मन् !
वक्ता	५. उपदेश करने वाले	पर	८. परायी
कर्ता	४. बनाने वाले	दारा	९. स्त्रियों का
अभिरक्षिता।	६. रक्षक थे (और)	अभिमर्शनम् ॥	१०. स्पर्श

श्लोकार्थ—हे ब्रह्मन् ! वे धर्म मर्यादा बनाने वाले, उपदेश करने वाले, रक्षक थे। और उन्होंने धर्म के विपरीत परायी स्त्रियों का स्पर्श कैसे किया ॥

एकोनविंशः श्लोकः

आप्तकामो यदुपतिः कृतवान् वै जुगुप्सितम् ।
किमभिप्राय एतं नः संशयं छिन्धि सुव्रत ॥२९॥

पदच्छेद — आप्तकामः यदुपतिः कृतवान् वै जुगुप्सितम् ।
किम् अभिप्रायः एतम् नः संशयम् छिन्धि सुव्रत ।।

शब्दार्थ—

आप्तकामः	३. पूर्ण काम थे फिर भी	**अभिप्रायः**	५. अभिप्राय से
यदुपतिः	२. भगवान् श्रीकृष्ण	**एवम्**	६. इस
कृतवान्	८. किया	**नः**	१०. हमारे इस
वै	१. निश्चय ही	**संशयम्**	११. संशय को
जुगुप्सितम् ।	७. घृणित कर्म को	**छिन्धि**	१२. मिटाइये
किम्	४. उन्होंने किस	**सुव्रत ।।**	९. हे परम ब्रह्मचारी मुनीश्वर

श्लोकार्थ—निश्चय ही भगवान् श्रीकृष्ण पूर्णकाम थे । उन्होंने किस अभिप्राय से इस घृणित कर्म को किया । हे परम ब्रह्मचारी मुनीश्वर ! इस संशय को मिटाइये ।।

त्रिंशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच— धर्मव्यतिक्रमो दृष्ट ईश्वराणां च साहसम् ।
तेजीयसां न दोषाय वह्नेः सर्वभुजो यथा ॥३०॥

पदच्छेद— धर्म व्यतिक्रमः दृष्टः ईश्वराणाम् च साहसम् ।
तेजीयसाम् न दोषाय वह्नेः सर्वभुजः यथा ।।

शब्दार्थ—

धर्म	२. धर्म का	**तेजीयसाम्**	७. तेजस्वी पुरुषों को वैसे ही
व्यतिक्रमः	३. उल्लंघन	**न**	९. नहीं होता
दृष्टः	६. देखे जाते हैं	**दोषाय**	८. कोई दोष
ईश्वराणाम्	१. समर्थ जन कभी-कभी	**वह्नेः**	१२. अग्नि को दोष नहीं होता
च	४. और	**सर्वभुजः**	११. सर्व कुछ भक्षण करने पर भी
साहसम् ।	५. साहस का काम करते	**यथा ।।**	१०. जैसे

श्लोकार्थ—समर्थ जन कभी-कभी धर्म का उल्लंघन और साहस का काम करते देखे जाते हैं । तेजस्वी पुरुषों को वैसे ही कोई दोष नहीं होता । जैसे सब कुछ भक्षण कर लेने पर भी अग्नि को दोष नहीं होता है ।।

एकत्रिंशः श्लोकः

नैतत् समाचरेज्जातु मनसापि ह्यनीश्वरः ।
विनश्यत्याचरन् मौढ्याद्यथारुद्रोऽब्धिजं विषम् ॥३१॥

पदच्छेद— न एतत् समाचरेत् जातु मनसा अपि हि अनीश्वरः ।
विनश्यति आचरन् मौढ्यात् यथा रुद्रः अब्धिजम् विषम् ॥

शब्दार्थ—

न	६. नहीं	विनश्यति	१०. वह नष्ट हो जायेगा
एतत्	५. इस विषय में	आचरन्	९. ऐसा आचरण करने से
समाचरेत्	७. सोचना चाहिये	मौढ्यात्	८. क्योंकि मूर्खता वश
जातु	२. कभी	यथा	११. जैसे कि
मनसा	३. मन से	रुद्रः	१४. शङ्कर ही पी सकते थे
अपि हि	४. भी	अब्धिजम्	१२. समुद्र से निकले
अनीश्वरः ।	१. असमर्थ व्यक्ति को	विषम् ॥	१३. विष को

श्लोकार्थ—असमर्थ व्यक्ति को कभी मन से भी इस विषय में नहीं सोचना चाहिये । क्योंकि मूर्खता वश ऐसा आचरण करने से वह नष्ट हो जायेगा । जैसे कि समुद्र से निकले विष को शङ्कर ही पी सकते थे ॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

ईश्वराणां वचः सत्यं तथैवाचरितं क्वचित् ।
तेषां स्ववचोयुक्तं बुद्धिमांस्तत् समाचरेत् ॥३२॥

पदच्छेद— ईश्वराणाम् वचः सत्यम् तथा एव आचरितम् क्वचित् ।
तेषाम् यत् स्ववचः युक्तम् बुद्धिमान् तत् समाचरेत् ॥

शब्दार्थ—

ईश्वराणाम्	१. शङ्करादि ईश्वरों के	तेषाम्	८. उन्होंने
वचः	२. वचन	यत्	९. जो
सत्यम्	३. सत्य होने पर भी	स्ववचः	१०. अपनी वाणी से
तथा	४. उस	युक्तम्	११. उपदेश किया है
एव	५. ही प्रकार का	बुद्धिमान्	१२. बुद्धिमान् व्यक्ति को
आचरितम्	६. आचरण	तत्	१३. उसी का
क्वचित् ।	७. कहीं-कहीं ही किया जा सकता है	समाचरेत् ॥	१४. आचरण करना चाहिये

श्लोकार्थ—शङ्करादि ईश्वरों के वचन सत्य होने पर भी उसी प्रकार का आचरण कहीं-कहीं ही किया जा सकता है । उन्होंने जो अपनी वाणी से उपदेश किया है, बुद्धिमान् व्यक्ति को उसी का आचरण करना चाहिये ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

कुशलाचरितेनैषामिह स्वार्थो न विद्यते ।
विपर्ययेण वानर्थो निरहंकारिणां प्रभो ॥३३॥

पदच्छेद— कुशल आचरितेन एषाम् इह स्वार्थः न विद्यते ।
विपर्ययेण वा अनर्थः निरहंकारिणाम् प्रभो ॥

शब्दार्थ—

कुशल	३. शुभ कर्म	विद्यते ।	९. होता है
आचरितेन	४. करने में	विपर्ययेण	११. अशुभ कर्म करने में
एषम्	५. उनका कोई	वा	१०. और
इह	६. सांसारिक	अनर्थः	१२. अनर्थ नहीं होता है
स्वार्थः	७. स्वार्थ	निरहंकारिणाम्	२. अहंकार रहित होते हैं
न	८. नहीं	प्रभो ॥	१. सामर्थ्यवान् पुरुष

श्लोकार्थ—सामर्थ्यवान् पुरुष अहंकार रहित होते हैं। शुभ कर्म करने में उनका कोई सांसारिक स्वार्थ नहीं होता है। और अशुभकर्म करने में अनर्थ नहीं होता है ॥

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

किमुताखिलसत्त्वानां तिर्यङ्मर्त्यदिवौकसाम् ।
ईशितुश्चेशितव्यानां कुशलाकुशलान्वयः ॥३४॥

पदच्छेद— किमुत अखिल सत्त्वानाम् तिर्यक् मर्त्य दिव ओकसाम् ।
ईशितुः च ईशितव्यानाम् कुशल अकुशल अन्वयः ॥

शब्दार्थ—

किमुत	१२. कैसे जोड़ा जा सकता है	ईशितुः	७. स्वामी सर्वेश्वर भगवान् को
अखिल	५. समस्त चराचर	च	९. और
सत्त्वानाम्	६. जीवों के	ईशितव्यानाम्	४. शासन करने योग्य
तिर्यक्	१. पशु-पक्षी	कुशल	८. शुभ
मर्त्य	२. मनुष्य	अकुशल	१०. अशुभ
दिव ओकसाम् ।	३. देवता आदि के	अन्वयः ॥	११. सम्बन्ध से

श्लोकार्थ—फिर पशु-पक्षी-मनुष्य-देवता आदि के शासन करने योग्य समस्त चराचर जीवों के स्वामी सर्वेश्वर भगवान् को शुभ और अशुभ सम्बन्ध से कैसे जोड़ा जा सकता है ॥

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

यत्पादपङ्कजपरागनिषेवतृप्ता योगप्रभावविधुताखिलकर्मबन्धाः ।
स्वैरं चरन्ति मुनयोऽपि न नह्यमानास्तस्येच्छयाऽऽत्तवपुषः कुत एव बन्धः ॥३५॥

पदच्छेद—यत् पाद पङ्कज परागनिषेव तृप्ताः योगप्रभाव विधुत अखिल कर्मबन्धाः ।
स्वैरम् चरन्ति मुनयः अपि न नह्यमानाः तस्य इच्छया आत्तवपुषः कुत एव बन्धः ॥

शब्दार्थ—

यत्	१. जिनके	स्वैरम्चरन्ति	११. स्वच्छन्द विचरण करते हैं
पादपङ्कज	२. चरण कमलों के	मुनयः अपि	९. विचारशील ज्ञानी जन भी उन्हें जानकर
पराग निषेव	३. रजका सेवन करके भक्तजन	न नह्यमानाः	१०. बन्धन को नहीं प्राप्त होते हैं तथा
तृप्ताः	४. तृप्त हो जाते हैं और	तस्य	१४. उन भगवान् को
योगप्रभाव	५. जिनसे योग प्राप्त करके योगी	इच्छया	१२. भक्तों की इच्छा से
विधूत	८. काट डालते हैं	आत्तवपुषः	१३. शरीर धारण करने वाले
अखिल	६. सारे	कुत एव	१६. कैसे हो सकता है
कर्मबन्धाः ।	७. कर्म बन्धन को	बन्धः ॥	१५. कर्म बन्धन

श्लोकार्थ—जिनके चरण कमलों के रज का सेवन करके भक्त जन तृप्त हो जाते हैं। जिनसे योग प्राप्त करके योगी सारे कर्म बन्धन को काट डालते हैं। विचारशीलज्ञानी जन भी उन्हें जानकर बन्धन को नहीं प्राप्त होते हैं, स्वच्छन्द विचरण करते हैं। भक्तों की इच्छा से शरीर धारण करने वाले उन भगवान् को कर्मबन्धन कैसे हो सकता है ॥

षट्त्रिंशः श्लोकः

गोपीनां तत्पतीनां च सर्वेषामेव देहिनाम् ।
योऽन्तश्चरति सोऽध्यक्षः क्रीडनेनेह देहभाक् ॥३६॥

पदच्छेद— गोपीनाम् तत् पतीनाम् सर्वेषाम् एव देहिनाम् ।
यः अन्तः चरति सः अध्यक्षः क्रीडनेन इह देहभाक् ॥

शब्दार्थ—

गोपीनाम्	१. गोपियों के	यः अन्तः	७. अन्तः करण में जो
तत्	२. उनके	चरति	८. विराजमान हैं
पतीनाम्	३. पतियों के	सः अध्यक्षः	९. वे ही सबके साक्षी हैं वे
च सर्वेषाम्	४. और सम्पूर्ण	क्रीडनेन	१२. लीला कर रहे हैं
एव	५. ही	इह	१०. ही यहाँ
देहिनाम् ।	६. शरीरधारियों के	देहभाक् ॥	११. दिव्य विग्रह धारण करके

श्लोकार्थ—गोपियों के, उनके पतियों के और सभी शरीर धारियों के अन्तः करण में जो विराजमान हैं, वे ही सबके साक्षी हैं। वे ही यहाँ दिव्य विग्रह धारण करके लीला कर रहे हैं ॥

सप्तत्रिंशः श्लोकः

अनुग्रहाय भूतानां मानुषं देहमास्थितः ।
भजते तादृशीः क्रीडा याः श्रुत्वा तत्परो भवेत् ॥३७॥

पदच्छेद— अनुग्रहाय भूतानाम् मानुषम् देहम् आस्थितः ।
भजते तादृशीः क्रीडाः याः श्रुत्वा तत् परः भवेत् ॥

शब्दार्थ—

अनुग्रहाय	२. कृपा करने के लिये ही	भजते	८.	करते हैं
भूतानाम्	१. भगवान् जीवों पर	तादृशीः	६.	और वैसी ही
मानुषम्	३. अपने को मनुष्य	क्रीडाः	७.	लीलायें
देहम्	४. रूप में	याः श्रुत्वा	९.	जिन्हें सुनकर
आस्थितः	५. प्रकट करते हैं	तत्परः ।	१०.	जीव भगवत परायण
		भवेत् ॥	११.	हो जायें

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण जीवों पर कृपा करने के लिये ही अपने को मनुष्य रूप में प्रकट करते हैं। और वैसी ही लीलायें करते हैं। जिसे सुन कर जीव भगवत्परायण हो जाये ॥

अष्टात्रिंशः श्लोकः

नासूयन् खलु कृष्णाय मोहितास्तस्य मायया ।
मन्यमानाः स्वपार्श्वस्थान् स्वान् स्वान् दारान् व्रजौकसः ॥३८॥

पदच्छेद— न असूयन् खलु कृष्णाय मोहिताः तस्य मायया ।
मन्यमानाः स्वपार्श्व स्थान् स्वान् स्वान् दारान् व्रज ओकसः ॥

शब्दार्थ—

न	६. नहीं की ।	मन्यमानाः	१०.	ऐसा समझ रहे थे
असूयन्	५. तनिक भी दोष बुद्धि	स्वपार्श्व	१३.	हमारे पास ही
खलु	३. निश्चय ही	स्थान्	१४.	स्थित हैं
कृष्णाय	४. श्रीकृष्ण में	स्वान् स्वान्	११.	कि हमारी
मोहिताः	९. मोहित होकर वे	दारान्	१२.	पत्नियाँ
तस्य	७. उनकी	व्रज	१.	व्रज
मायया ।	८. योगमाया से	ओकसः ॥	२.	वासी गोपों ने

श्लोकार्थ—व्रजवासी गोपों ने निश्चय ही श्रीकृष्ण में तनिक भी दोष बुद्धि नहीं की । वे उनकी योग माया से मोहित होकर ऐसा समझ रहे थे कि हमारी पत्नियाँ हमारे पास ही हैं ॥

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

ब्रह्मरात्र उपावृत्ते वासुदेवानुमोदिताः ।
अनिच्छन्त्यो ययुर्गोप्यः स्वगृहान् भगवत्प्रियाः ॥३९॥

पदच्छेद— ब्रह्मरात्रे उपावृत्ते वासुदेव अनुमोदिताः ।
अनिच्छन्त्यः ययुः गोप्यः स्वगृहान् भगवत् प्रियाः ॥

शब्दार्थ—

ब्रह्मरात्रे	१.	ब्रह्मा की रात्रि के बराबर रात्रि	ययुः	८.	लौट गयीं क्योंकि वे
उपावृत्ते	२.	बीत जाने पर	गोप्यः	३.	वे गोपियाँ
वासुदेव	४.	श्रीकृष्ण की	स्वगृहान्	७.	अपने अपने घरों को
अनुमोदिताः	५.	आज्ञा पाकर	भगवत्	९.	भगवान् श्रीकृष्ण को
अनिच्छन्त्यः ।	६.	न चाहते हुये भी	प्रियाः ॥	१०.	प्रसन्न करना चाहती थीं

श्लोकार्थ—ब्रह्मा को रात्रि के बराबर रात्रि बीत जाने पर वे गोपियाँ श्रीकृष्ण की आज्ञा पाकर न चाहते हुये भी अपने अपने घरों को लौट गईं। क्योंकि वे भगवान् श्रीकृष्ण को प्रसन्न करना चाहती थीं ॥

चत्वारिंशः श्लोकः

विक्रीडितं व्रजवधूभिरिदं च विष्णोः श्रद्धान्वितोऽनुशृणुयादथ वर्णयेद् यः ।
भक्तिं परां भगवति प्रतिलभ्य कामं हृद्रोगमाश्वपहिनोत्यचिरेण धीरः ॥४०॥

पदच्छेद— विक्रीडितम् व्रजवधुभिः इदम् च विष्णोः श्रद्धान्वितः अनुशृणुयात् अथ वर्णयेत् यः ।
भक्तिम् पराम् भगवति प्रतिलभ्यकामम् हृद् रोगम् आशु अपहिनोति अचिरेण धीरः ॥

शब्दार्थ —

विक्रीडितम्	७.	इस विषय का	भक्तिं पराम्	१३.	पराभक्ति को
व्रजवधुभिः	४.	व्रज सुन्दरियों के साथ	भगवति	११.	वह भगवान् के चरणों में
इदम्	६.	इस चिन्मय तथा	प्रतिलभ्य	१४.	प्राप्त करता है और
च विष्णोः	५.	भगवान् श्रीकृष्ण के	कामम्	१७.	काम विकार से
श्रद्धाअन्वितः	८.	श्रद्धा के साथ	हृद् रोगम्	१६.	हृदय के रोग
अनुशृणुयात्	९.	बार बार श्रवण और	आशु	१२.	शीघ्र ही
अथ	१.	अतः	अपहिनोति	१८.	छुटकारा पा जाता है
वर्णयेत्	१०.	वर्णन करता है	अचिरेण	१५.	तत्काल
यः ।	२.	जो	धीरः ॥	३.	धीर पुरुष

श्लोकार्थ—अतः जो धीर पुरुष व्रज सुन्दरियों के साथ भगवान् श्रीकृष्ण के इस चिन्मय तथा इस विषय का श्रद्धा के साथ बार बार श्रवण और वर्णन करता है। वह भगवान् के चरणों में शीघ्र ही परा भक्ति को प्राप्त करता है। और तत्काल हृदय के रोग काम विकार से छुटकारा पा जाता है॥

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे पूर्वार्धे रासक्रीडा
वर्णनं नाम त्रयस्त्रिंशः अध्यायः ॥३३॥